

पगेरना पुं. (देश.) कसेरों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली एक पैनी छेनी जिससे बरतनों पर कारीगरी की जाती है।

पगोड़ा पुं. (देश.) बौद्ध मंदिर।

पघरना अ.क्रि. (तद्.) दे. पिघलना।

पघा पुं. (देश.) गाय, बैल, तथा भैंस आदि के गले में बाँधी जाने वाली मोटी रस्सी।

पच पुं. (तद्.) 1. संख्या पाँच का समासगत रूप दे. पंच जैसे- पचरंग, पचमेवा, पचरतन आदि 2. पाचक, पचाने वाला।

पचक पुं. (तद्.) 1. रसोइया, पकाने वाला, खाना बनाने वाला 2. पिचकने की अवस्था का बोध कराने वाला 3. पिचकने के कारण दिखाई देने वाला निशान या गड़ढा, पिचक।

पच कपाल पुं. (तद्.) वह पुरोडाश जिसका संस्कार पाँच कपालों (कसेरों) में किया गया हो वि. पाँच कसोरे में तैयार किया हुआ।

पचखना वि. (तद्.) 1. पाँच खंडों वाला या पंचमंजिला 2. दबा हुआ या पिचका हुआ।

पचखा पुं. (तद्.) दे. पंचक।

पचगुना वि. (तद्.) 1. पाँच गुणा या पाँच बार अधिक।

पचड़ा पुं. (देश.) 1. झंझट, बखेड़ा, बाधा 2. एक प्रकार का लोक गीत, जो देवी की मूर्ति या चित्र के समक्ष गाया जाता है 3. लावणी की तरह का आख्यानक गीत जिसमें पाँच-पाँच चरणों के टुकड़े होते हैं।

पचतोरिया पुं. (तद्.) एक प्रकार का कपड़ा।

पचतोलिया पुं. (तद्.) 1. पाँच तोले का बाट, बजन मापने के अर्थ में प्रयुक्त 2. पाँच तौलिया 3. वजन में हल्की।

पचना अ.क्रि. (तद्.) 1. पचाने की क्रिया 2. खाई गई वस्तु का जठराग्नि की सहायता से रसादि में परिणत होना, हजम होना, पच जाना जैसे- (क) अधिक खा लेने पर भोजन पचना कठिन हो

जाता है (ख) चूरण खाया, तब कहीं गरिष्ठ भोजन पचा 2. किसी दूसरे की वस्तु को हथिया लेना, हजम कर जाना, वापस न लौटाना जैसे- उसे मुफ्त के लाखों के जेवर सहज ही पच गए 3. किसी बात को छिपाना या न छिपा पाना, जैसे- (क) उसके पेट में बड़ी-बड़ी खबरें पच जाती हैं (ख) वह इतनी-सी बात न पचा सका 5. परिश्रम करके थककर या हार कर बैठ गया 5. एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में समा जाना, जैसे- जरा से चावलों ने पूरा घी पचा लिया मुहा. पच-मरना- किसी कार्य हेतु जी-तोड़ परिश्रम करना।

पचनागार पुं. (तद्.) पाकशाला, रसोईघर, वह स्थान जहाँ खाना पकाया जाता है।

पचनाग्नि स्त्री. (तद्.) जठराग्नि, पेट की अग्नि जो खाए हुए पदार्थों को पचाती है।

पचनिका स्त्री. (तद्.) कड़ाही, भोजन पकाने वाला बरतन।

पचनी स्त्री. (तद्.) एक प्रकार का नींबू, बिजौरा नींबू, बिहारी नींबू, जंगली नींबू।

पचनीय वि. (तद्.) 1. पचाने योग्य, जो पच सकता हो या पचाया जा सकता हो 2. जिसे पकाया जा सकता हो।

पचपच पुं. (अनु.) शिव का एक नाम स्त्री. कीचड़।

पचपचा वि. (तद्.) अधपका भोजन, ऐसा आधा पका आधा कच्चा भोजन जिसका पानी पूरी तरह से सूखा न हो, शेष रह गया हो।

पचपचाना अ.क्रि. (तद्.) 1. किसी पदार्थ का आवश्यकता से अधिक शील होना 2. कीचड़ जैसा या कीचड़ युक्त होना।

पचपन वि. (तद्.) 1. पचास और पाँच, साठ में पाँच कम, संख्या वाचक शब्द जो कि 55 के रूप में लिखा जाता है।

पचपना अ.क्रि. दे. पिचकना।